राजकीय महाविद्यालय, बदायूँ उ0प्र0

कुलगीत

शस्य श्यामला 'वेदामऊ' (बदायूँ) की हरित उर्वरा पुण्य धरा पर,
जन–जन के हित–चिंतन हेतु ज्ञान का दीप जलाया है ।

सूफी–संतों की धरती पर ज्ञान–सूर्य है उदित हुआ,
ज्ञान प्रभा से पथ आलोकित अन्तस् का तम दूर हुआ,
परहित निरत निरंतर रहकर ज्ञान – आलोक फैलाया है।
जन–जन के हित–चिंतन हेतु.....।

गौरवशाली नगर निराला विज्ञ जनों ने इसको पूजा,
सोत नदी की छटा मनोहर गंगा जल–सा और न दूजा,
वेदों का ये केन्द्र बना तब 'वेदामऊ' कहलाया है।
जन–जन के हित–चिंतन हेतु.....।

जन्म भूमि ये उस रजिया की जो दिल्ली सुल्तान बनी,
शकील, अवस्थी, उर्मिलेश की कविता जनपद की शान बनी,
उसी यशस्वी वसुंधरा पर ज्योर्तिपुंज जलाया है ।
जन–जन के हित–चिंतन हेतू.....।

बापू ने पग धरे यहाँ जब गर्वित जन–मन हुआ मगन,
सत्य, अहिंसा, मानवता की किरणों से खिल उठा चमन,
शान्ति, समन्वय, नैतिकता का अमृत–घट छलकाया है।
जन–जन के हित–चिंतन हेतू.....।

दिव्य भारती के चरणों में शीश झूका कर करें नमन,
शिक्षा एवं दीक्षा पाकर सम्मानित हों सभी छात्रजन,
विविध विषय के विद्वानों ने नूतन अलख जगाया हैं,
जन–जन के हित–चिंतन हेतु.....।

विद्या के पावन मंदिर में पूर्ण काम हों सभी सुजन,
वसुधा बन जाये कुटुम्ब – सी संस्कारों से खिले चमन,
सुख सौहार्द बढ़ाकर जग में ज्ञानामृत फैलाया है।
जन–जन के हित– चिंतन हेतु .....।

डॉ0 सुरंगमा यादव